पंजीयन क्रमांक 04/14/08825/06
ISSN-0975-2560

# पारमिता

( वर्ष 8, अंक 8 )

## दर्शन-परिषद्

(मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)

**प्रबंध सम्पादक**
**डॉ. विनोद कुमार कटारे**

**सम्पादक**
**डॉ. प्रदीप कुमार खरे**

# कार्यसमिति

## अध्यक्ष

**प्रो.दीपा पाण्डे**
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष–दर्शन विभाग
शा. कमलाराजा कन्या महाविद्यालय ग्वालियर

## उपाध्यक्ष

**डॉ. धरम सिंह मरावी**
अध्यक्ष–दर्शन विभाग
शासकीय टी.सी.एल. महाविद्यालय
जांजगीर (छत्तीसगढ़)

**डॉ. राकेश सोनी**
सहायक प्राध्यापक–दर्शन विभाग
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय
विश्वविद्यालय अमरकंटक (म.प्र.)

**डॉ. विनोद कुमार कटारे**
दर्शन विभाग
शा. हमीदिया महाविद्यालय भोपाल

## महासचिव

**डॉ. प्रदीप कुमार खरे,**
**भोपाल**
मो. 9425029308
***pradeepkhare4@gmail.com***

## सहसचिव

**डॉ. हरनाम सिंह अलरेजा**
अध्यक्ष–दर्शन विभाग
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

**डॉ. सुभाष चंद्र शाक्य**
शा. एम.एल.बी. महाविद्यालय
ग्वालियर

**डॉ. जाहिरा खातून**
शा. सरोजिनी नायडू कन्या
महाविद्यालय भोपाल

## कोषाध्यक्ष

**डॉ. जयप्रकाश शाक्य**
आचार्य एवं अध्यक्ष दर्शन विभाग शास्त्र
शा.महाराजा विद्यालय छतरपुर (म.प्र.)

**संपादक मंडल :** प्रो. एस.एस. नेगी (सागर), डॉ. जे.एस. दुबे (भोपाल), डॉ. श्रीकांत मिश्रा (रीवा), डॉ. सत्यप्रकाश पाण्डे (रतलाम), डॉ. श्रीमती शोभा मिश्रा (मंदसौर)

**परामर्शदात्री समिति :** प्रो. प्रियव्रत शुक्ल (छतरपुर), प्रो. छाया राय (जबलपुर), प्रो. राकेश मिश्र (जम्मू), प्रो. जटाशंकर (इलाहाबाद), प्रो. अखिलेश्वर प्रसाद दुबे (सागर), प्रो. गायत्री सिन्हा (जबलपुर)

## विद्यार्थी प्रतिनिधि

डॉ. नरेन्द्र बौद्ध, डॉ. देवेन्द्र जाटव, डॉ. नेहा शाक्य,
संदीप चौरसिया, आलोक दुबे, रचना जैन, प्रशांत शर्मा,
ज्योति चौधरी, देवदास साकेत

ISSN-0975-2560

# पारमिता

(वर्ष 8, अंक 8)

**सम्पादक**

डॉ. प्रदीप कुमार खरे

**प्रबंध सम्पादक**

डॉ. विनोद कुमार कटारे

**दर्शन-परिषद**
(मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ)
पंजीयन क्रमांक 04/14/08825/06

**email : mpcgdarshanparisad@gmail.com**

Acharya Vishnugupta "Chanakya"
LIBRARY

**प्रकाशक : प्रो. दीपा पाण्डे**
**अध्यक्ष, दर्शन परिषद (म.प्र.एवं छत्तीसगढ़)**

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मुद्रक : श्रेया ऑफसेट, एम.पी.नगर
भोपाल

प्रतियाँ : 100

वर्ष : 2017

मूल्य : रु. 500

इस शोध पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लिए लेखक सर्वथा उत्तरदायी है।
उनके विचारों से परिषद् की सहमति अनिवार्य नहीं है।

# अनुक्रमणिका

| | | |
|---|---|---|
| **सम्पादकीय** | डॉ. प्रदीप कुमार खरे | 05 |
| 1. अद्वैत दर्शन तथा पलायनवाद | डॉ. अखिलेश्वर प्रसाद दुबे | 06 |
| 2. बोध–विज्ञान | डॉ. राकेश सोनी | 11 |
| 3. नैतिक मूल्यों की व्यक्तित्व विकास में भूमिका | डॉ. जाहिरा खातून | 16 |
| 4. योग दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता | डॉ. राहुल वर्मा | 20 |
| 5. भारतीय दर्शन में पर्यावरण चेतना के तत्व व आश्रम व्यवस्था के विशेष सन्दर्भ में एक अध्ययन | डॉ. हेमन्त नामदेव | 23 |
| 6. रामचरित मानस में ईश्वर की अवधारणा | डॉ. जयप्रकाश शाक्य | 35 |
| 7. समकालीन भारतीय समाज में शास्त्रीय नैतिक मूल्यों की दार्शनिक समीक्षा | संदीप कुमार चौरसिया | 40 |
| 8. समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना में योग की भूमिका | रचना जैन | 52 |
| 9. MORAL VALUES AND SOCIAL PROBLEMS: WITH REFERENCE TO ALLAMA IQBAL | **Abida Iqbal Lone** | 61 |
| 10. भारतीय दर्शन में 'नैतिक मूल्य और समाज' का महत्व | सरला साहू | 65 |
| 11. सामाजिक परिवर्तन में दार्शनिकों की भूमिका | डॉ. नेहा शाक्य | 69 |
| 12. संतों का दार्शनिक विमर्श | कपिल नेमा | 75 |
| 13. Moral Values and Today's Youth | **Dr. Aamir Riyaz** | 82 |
| 14. समाज में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता | डॉ. देशराज सिरसवाल | 86 |
| 15. नैतिक मूल्यबोध और चिकित्सक–एक विमर्श | डॉ. सविता गुप्ता | 92 |
| 16. नैतिक पर्यावरण का ह्रास एक चिंतन | डॉ. आभा होलकर | 96 |
| 17. योग दर्शन और चित्तवृत्तिनिरोध | डॉ. महेश कुमार निगम | 98 |
| 18. नीति पथ | डॉ. कुमुदिनी पाठक | 103 |
| 19. हिन्दू समाज और नैतिक मूल्य | राजू नारंग | 107 |
| 20. नैतिक मूल्य और समाज | मोनिका शिवहरे | 110 |
| 21. वर्तमान जीवन शैली के सन्दर्भ में परमहंस | वर्षा चौरसिया | 118 |

योगानंद की नैतिक मीमांसा की व्याख्या अंजली बर्मन 121

22. नैतिक मूल्य और समाज डॉ. लक्ष्मी मेहर 127

23. वर्तमान परिदृश्य में शंकराद्वैत की नैतिक एवं सामाजिक प्रासंगिकता मंजू तिवारी 131

24. नैतिक मूल्य और समाज कु. ज्योति गोयल 136

25. नैतिक मूल्य एवं समाज डॉ. रश्मि पटेल 139

26. विवेकानंद तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन में नैतिक मूल्य तथा समाज लखन यादव 145

27. नैतिक मूल्य और समाज डॉ. सुषमा द्विवेदी 152

28. सांख्यदर्शन में कार्यकारणवाद अभय कुमार सेठ 160

29. नैतिक मूल्यों का गांधीवादी दृष्टिकोण देवदास साकेत 164

30. नैतिक मूल्य और समाज नीलेश कुमार जैन 169

31. नैतिक मूल्यों का पतन और उत्थान : ओशो के दृष्टिकोण से डॉ. देवेन्द्र कुमार जाटव 176

32. वेदांत सम्मत चेतना एवं योगान्तर्गत प्रत्याहार की अवधारणा डॉ. संध्या मोघे 184

33. मंत्र शक्ति

# भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता

**डॉ. देशराज सिरसवाल**

भारतीय समाज मूल्य प्रधान समाज है। भारतीय संस्कृति में मूल्यों को मनुष्य के सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक जीवन में विशेष स्थान दिया गया है क्योंकि मूल्यों के वास्तवीकरण का नाम ही संस्कृति है, वर्तमान समय में विज्ञान ने जहाँ मनुष्य को भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अविष्कारों के ढेर लगा दिए हैं, वहां उसके जीवन में एक खोखलापन भी उत्पन्न कर दिया है, ऐसे में समाज, देश और अपने स्वयं के जीवन में उसने मानव मूल्यों को तिलांजली दे दी है,मानव जीवन की सार्थकता तभी है जब वह श्रेष्ठ भावनाएं रखे। हम एक लोकतान्त्रिक समाज का हिस्सा हैं जहाँ पर हम आपसी भाई–चारे, न्याय , समान अधिकार और स्वतन्त्रता का हिमायती बनने का नाटक करते हैं, संविधान में दिए गये मूल्यों की प्राप्ति से पहले हमें व्यक्ति के जीवन और समाज का भी मुआयना करना होगा तभी हम श्रेष्ठ मूल्यों को समाज में स्थापित कर सकते हैं, मूल्य व्यक्ति की सामाजिक विरासत का एक अंग होता है इसलिए मूल्यों की व्यवस्था मानव आस्तित्व के विभिन्न स्तरों या आयामों में व्यक्ति के अनुकूलन की प्रकिया का मार्गदर्शन करती है, नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन के साथ–साथ समाज को भी उत्कृष्टता की तरफ अग्रसर करते हैं। इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य नैतिक मूल्यों के व्यक्ति के जीवन और वर्तमान भारतीय समाज में उपयोगिता का अध्ययन करना है।

## नैतिक दर्शन और मूल्य :-

नैतिक दर्शन का अंग्रेजी रूपान्तर एथिक्स अथवा मोरल फिलोसफी है, समाज द्वारा अनुमोदित अभ्यासजन्य विधिपरक कर्म मानव द्वारा सम्पन्न होते हैं जो उसके व्यवहार को निर्धारित करते हैं, अतः नैतिक दर्शन मानव व्यवहार दर्शन है, जेम्स हेस्टिंगस के अनुसार नैतिक दर्शन की विषय–वस्तु मानव–आचरण और चरित्र है, मानव आचरण और चरित्र के निर्धारक तत्व नैतिक मूल्य हैं, मूल्य आदर्श हैं, इसलिए मानव–आचरण प्राकृतिक या मनोविज्ञानिक तथ्य न होकर आदर्शात्मक तथ्य है. मूल्य आदर्श है, तथ्य नहीं, आदर्श वह है जिसकी प्राप्ति करना मनुष्य का लक्ष्य होता है, उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए मनुष्य जिस प्रकार कर्म करता है, उससे उसका चरित्र निर्मित होता है, दूसरे शब्दों में कहें तो जो हमें पशुओं से अलग मानव के रूप में पहचान दिलाते हैं अथवा जिस कारण हम मानव कहे जाते हैं अथवा जिस कारण

यह चिंतनशील या विवेकशील जीव कहे जाते हैं, वे ही मूल्य हैं। जो हमें मनुष्य बनाते हैं या जिनके कारण हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी बनते हैं, वे ही मूल्य हैं। मूल्य वे है जो मानवता, सामाजिक और नैतिकता का आधार हैं अथवा उन्हें हम सामाजिक एवं नैतिक नियमों के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। जन कल्याण के लिए, सामाजिक संतुलन बनाये रखने के लिए समावेशी समग्र विकास के लिए देश–प्रेम की भावना विकसित करने के लिए, परस्पर सौहार्द के लिए , जो किया जाना चाहिए, वे हमारे लिए मूल्य है,”[2]

## धर्म, संस्कृति और मूल्य : -

हम सभी मूल्यों की आदर्शात्मक प्रस्तुती और व्याख्या में विश्वास रखते है और जो भी मूल्य धर्म परंपरा, संस्कृति के द्वारा हमें प्राप्त होते हैं उन्हें हम ज्यादा मूल्यवान समझते हैं और जो भी चिन्तन और मूल्य हमारी परम्परा को चुनौती देते हैं वह प्रायः हमारे लिए निकृष्ट होते हैं, पुराने समय में बेशक धार्मिक संस्थाओं ने जीवन मूल्यों तथा संस्कृतिक आदर्शो ने लोक जीवन में योगदान दिया होगा लेकिन आज ऐसा नही है तब परम्परागत मूल्यों का वैज्ञानिक और तार्किक विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि ये सिर्फ आदर्शरूप और कल्पनात्मक ही सिद्ध होते हैं जिनका वास्तविकता से कोई सरोकार नहीं होता या जिन्हें हम व्यावहारिक रूप नहीं दे सकते। तो ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि मूल्यों की परिभाषा का पुनः विश्लेषण और व्याख्या की जाये, जो मूल्य व्यक्ति के साथ–साथ उसके समाज के विकास में भी योगदान दे ऐसे ही मूल्य हमारी आज की जरूरत है।

धर्म और संस्कृति के नाम पर मूल्यों का अर्थ संकुचित कर देना और उसकी मूल भावना से सरोकार न रख केवल राजनैतिक फायदे के लिए मानवता को दांव पर लगाना आज की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि “संस्कृति की एक पुरानी कहावत है कि *“बुभुक्षितं किम न करोति पापम”* अर्थात भूखा व्यक्ति कौन सा पाप नहीं कर सकता है, एक भूखे व्यक्ति के लिए चरित्र, करूणा, दया, मुदिता एवं संवेदनशीलता आदि का साधन आता है, सत्य अहिंसा,प्रेम, देश–प्रेम, त्याग आदि उद्दित मानवीय मूल्यों की अपेक्षा एक भूखे, आभावग्रस्त, उपेक्षित, हाशिए पर पड़े व्यक्ति से करना मेरे विचार में शायद उचित नहीं होगा, आचार–विचार, धर्म, आचरण, मर्यादा, अनुशासन आदि की बात शारीरिक तल पर अपेक्षाकृत संतुष्ट व्यक्ति से की जानी चाहिए, ”

धर्म मानव की प्रगति में बाधक है तथा शोषण में सहायक है, भारत में धार्मिक संस्थाओं द्वारा नियन्त्रण की स्थापना सदा से की जाती रही है।[4] वर्तमान समय में यह नियन्त्रण सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर बराबर देखने को मिलता है जो कि विभिन्न सामाजिक बुराईयों का कारण और संरक्षक बन गया है, सदियों पहले सुकरात ने कहा था कि “अनपरखा जीवन जीन योगय नही है (एन अनएगामाइंड लाइफ इज नॉट वर्थ लिविंग )”, लेकिन आज सामान्य से लेकर प्रबुद्ध जन, अनपढ से लेकर पढ़े लिखें लोग ऐसे विश्वासों से चिपके रहते हैं जो की नितांत तर्कहीन और अवैज्ञानिक होते हैं, प्रश्न उठाने की आदत की वजह से ही

सुकरात को जहर का प्याला पीना पड़ा ब्रूनों को जिन्दा जला दिया गया और गैलीलियो को दंडित और अपमानित किया गया, भारत में यही काम लेखकों और चिंतकों की हत्याएं करके और प्रताडित करके किया जा रहा है।

डॉ. अम्बेडकर ने कहा " हम भारत में इन समस्याओं को नजरंदाज नही कर सकते। हमें अपने मूल्यों का दोबारा से मूल्यांकन करना होगा। हमें न केवल सभी भारतीयों के सम्मानजनक जीवन के साधन के रूप में इस संपदा में उनकी हिस्सेदारी के मौलिक अधिकार पर सहमत होना होगा, बल्कि असुरक्षा से बचने के तरीके भी ढूढने होंगे।" समय–समय पर दार्शनिकों ने समाज को दिशा दिखाने का काम किया है और आज भी ये उसका कर्तव्य बनता है की वह इस पर भी चिन्तन करे, एक सहज, स्वाभाविक, अनुकूल वातावरण में ही मूल्यों का सृजन, संवर्धन एवं उत्कर्ष संभव है क्योंकि यह सामाजिक विघटन को रोकने और सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए है अति आवश्यक है।

## सामाजिक मूल्य और नैतिक मूल्यों में सम्बन्ध : -

डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा के अनुसार,"सामाजिक मूल्य वे सामाजिक मानक या लक्ष्य हैं जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों महत्वपूर्ण समझी जाती हैं, इनकी सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है। सामाजिक मूल्य कोई गूढ तत्व नहीं है जिसमें समाज के सदस्य न हों इसलिए ये सदस्य इन मूल्यों के सम्बन्ध में पूर्णतः अचेत नहीं होते है," [5] सामाजिक मूल्य, व्यक्तिगत मूल्यों की परिधि से स्वतंत्र अपनी सत्ता रखते हैं, व्यक्ति पुरूषार्थ कर सकता है, सामाजिक मूल्य वही बाहरी शक्ति है जो व्यक्तिगत मूल्य से श्रेष्ठ है और जिसके आगे उसे झुकना पड़ता है, इसलिये वर्तमान आवश्यकता के अनुरूप सामाजिक मूल्यों का स्वरूप बदल रहा है और यह प्राचीन स्थापित मूल्यों के विपक्ष में खड़े दिखते हैं।

जब हम सही ढंग से सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण नहीं कर पाते तो समाज में कछ विमूल्य भी मूल्यों की जगह ले लेते हैं और वह व्यक्तिगत नैतिकता को भी प्रभावित करते हैं, उदाहरणस्वरूप जैसे 'सत्य की सदा विजय होती है' यह उत्तम मूल्य है परन्तु 'प्रेम और राजनीति में कुछ भी अनुचित नहीं है ' यह कथन लोकप्रिय है। परन्तु यह गैर–मूल्यों की अभिव्यक्ति है, 'उसी प्रकार यदि क्षमा कर देना ही सबसे बड़ी सजा देना है' मूल्य है, तो ' खून का बदला खून' निश्चय ही गैर मूल्य होगा, व्यक्तिगत स्तर पर मनुष्य कुछ लोकप्रिय गैर–मूल्यों से प्रभावित होकर सामाजिक मूल्यों का उल्लंघन करता है तथा उनके विरूद्ध आचरण करता है, इसी प्रकार सामाजिक स्तर पर भी समाज के प्रति अपराध, शोषण नीति, भ्रष्टाचार आदि इन्ही अवमूल्यों के परिणाम हैं जो कहीं न कहीं परम्परा और संस्कृति की छाप रखते है, विमूल्य उन संस्थाओं या आचरणों के माध्यम से ही अभिव्यक्त होते हैं जो कानून तथा सामाजिक संहिताओं का उल्लंघन करते हैं, ऐसे विमूल्य कभी समाज में संसक्ति नहीं आने देते अपितु विसंगति और विघटन लाते हैं,

अतः हमारी जिम्मेदारी बन जाती है की हम वैयक्तिक नैतिकता और सामाजिक नैतिकता के लिए केवल ऐसे मूल्यों को ही अपने जीवन में महत्व दें जो सार्वभौमिक पहचान रखते हों ओर किसी विशेष देश, धर्म, जाति संस्कृति की पहचान न बने जैसे भारत में संस्कृति जो कि निम्न जातियां या अन्य समूहों की सामाजिक स्थिति , रीति–रिवाज, आदर्श, मूल्यों को बदलने और ब्राह्मण आदर्शों की श्रेष्ठता सिद्ध करने का साधन मात्र है, जैसा कि डॉ. एम.एन.श्रीनिवास मानते हैं की,''संस्कृतिकरण वह प्रकिया है की जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या कोई जन–जाति या अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति–रिवाज कर्मकांड और जीवन पद्धति को बदतला है,''[6] मदिरा त्याग और शाकाहार उसी शुद्धतावादी आदर्श को प्रस्तुत करता है जो कि ब्राह्मणवाद का आदर्श है,

## व्यक्तिगत और अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता : –

नैतिकता से अभिप्राय है पहले बनी नीतियों और कानूनों के अनुसार काम करना , यह अच्छे बुरे के बीच के अंतर करने के बाद अच्छे करने की प्रेरणा देती है, नैतिकता बहुत की कोमल विचार है जो आम लोगों में भी बहुत कम होता है, जब हम व्यक्तिगत नैतिकता की बात करते हैं तो तार्किकता, समानता का भाव, आत्म नियन्त्रण, सहनशील और न्यायपूर्णता आदि आज के समय के मूल्य निर्धारित होते हैं, फिर भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके बारे में सोचना भी महत्वपूर्ण है, कुछ विद्वान कहते है कि व्यक्तिगत नैतिकता ही अतंर्राष्ट्रीय नैतिकता है, अतंर्राष्ट्रीय नैतिकता को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है की ''अतंर्राष्ट्रीय नैतिकता आमतौर पर अपनाए गए वो विचार और तरीके हैं जिसको आमतौर पर अतंर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में आमतौर पर प्रयोग में लाते हैं,''[7] अतंर्राष्ट्रीय नैतिकता के ही निर्पेक्षतावाद , समानता, मानवाधिकार आदि ऐसे विचार है जो हमें उन नैतिक मूल्यों के प्रति प्रेरित करते हैं जिससे किसी भी देश में अतंर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार न्याय , समानता और स्वतन्त्रता को सामाजिक के साथ–साथ व्यक्तिगत क्षेत्र में भी इनको लागू करने के लिए प्रेरित करते हैं, यही मानवता और मानवीय विकास की कुंजी है, इसलिए वर्तमान सरकार को इस संबंध में स्थिर और सुनिश्चित रहना चाहिए।

## वर्तमान समाज और उसकी आवश्कयता :-

वर्तमान भारतीय समाज एक विशेष बदलाव की दिशा से गुजर रहा है जहाँ पर लोग ऐसे सामाजिक तन्त्र और मूल्य व्यवस्था की मांग कर रहे है जिसमें मनुष्य अपने विकास के लिए उचित साधन पा सके मतलब सामाजिक न्याय की भावना का व्यवहार में प्रयोग हो और वह तभी संभव है जब हम लोकतंत्र के कुछ प्राथमिक नियमों और तत्वों को पूर्ण समर्थन दें. इब्राहम लिंकन के अनुसार,''लोकतंत्र लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए सरकार है,'' और यह तभी संभव है जब मानवीय अधिकार, न्याय, समानता और स्वतन्त्रता का समानरूप से देश द्वारा निरूपण हो लेकिन''राजनीतिज्ञों ने संविधान संसोधनों के माध्यम से सर्वशक्तिमान जैसी स्थिति हासिल कर ली है, इसलिए कोई सार्थक बदलाव बिना राजनैतिक इच्छा के

सम्भव नहीं है राजनीतिज्ञ हमारी चिन्तन परम्परा की भांति किसी भी व्यवस्था परिवर्तन के प्रयास को यथार्थ परिवर्तन मानने के बजाय परिवर्तन का आभास मानते है,''[8]

इसी कारण पिछले कुछ वर्षो में हुए सामाजिक आन्दोलन जो की भ्रष्टाचार या अन्य सामाजिक बुराईयों से सम्बन्धित थे वे असफल हो गये, क्योंकि हम लोग सभी धर्म–जाति के नाम पर बंटे हुए है और हमारे मूल्य भी उसी के सापेक्ष है, उदाहरण के लिए एक सवर्ण महिला के साथ बलात्कार होता है तो हम सभी की सहानुभूति सडकों पर आ जाती है लेकिन अगर दलित स्त्री के साथ यह सब होता है तो हमारे कान पर जूं नहीं रेंगती, यही सब ईसाई और मुस्लिम धर्म की स्त्री होने पर होती है। उसका सबसे बड़ा कारण है, ''कभी धर्म के नाम पर, कभी संघीय ढांचे में स्वायत्ता के नाम पर स्थानीय मुद्दों को उभारकर भावनात्मक उत्तेजना पैदा कर अपने काले कारनामों पर पर्दा डालते रहे हैं और समाज में सार्थक बदलाव के लिए काम करने वाले बुद्धिजीवी, समाज सेवी, नागरिक समाज अथवा युवाओं को संवैधानिक संस्थाओं का दुश्मन करार देते हुए उन्हें सामाजिक न्याय का विरोधी बताते हैं, ये प्रत्येक उस आवाज या आन्दोलन को कुचलने के लिए तत्पर रहते हैं, जो इनके सिंहासन को किसी भी प्रकार से कमजोर या अस्थिर कर सके, ये प्रत्येक जनांदोलन को शिक्षित युवा शहरी मध्यवर्ग का क्षणिक उन्माद बताते हुए उसे जनांदोलन मानने से इंकार करते हैं, लेकिन अब नियंत्रण इनके हाथ से निकलता जा रहा है,''[9]

डॉ. आंबेडकर ने भारत में व्याप्त आर्थिक और सामाजिक अंतर्विरोधों को दूर करने के लिए जिस राज्य की कल्पना की थी वह राजनैतिक दृष्टि से समाजवादी था। उसे उन्होंने राजकीय समाजवाद कहा था। उसे समाजवादी लोकतंत्र भी कहा जा सकता है। हमारे लिए यह नमूना आज भी प्रासंगिक है। डॉ. आंबेडकर की इस गंभीर चेतावनी को दोहराना आवश्यक समझता हूँ, ''26 जनवरी,1950 को हम विरोधाभासों के क्षेत्र में प्रवेश करने जा रहे है। एक तरफ जहाँ हमारे राजनीतिक क्षेत्र में समानता होगी वहीं हमारी परम्पराओं के कारण सामाजिक और आर्थिक जीवन में असमानता बनी रहेगी। हमें इस अन्तर्विरोध को शीघ्रातिशीघ्र दूर करना होगा अन्यथा इस असमानता के शिकार लोग मुश्किल से बनाये गए इस राजनीतिक लोकतंत्र को ध्वस्त कर देंगे।''[10]

दर्शन की मनुष्यता को सबसे बड़ी देन यह है कि उसने जीवन को दिशा देने के लिए मूल्यों का निर्माण और निर्धारण किया है, सामाजिक जीवन एक अँधेरे में काली बिल्ली को पकडने के समान है वह अँधेरे में किसी भी दिशा में जा सकता है इसलिए दर्शन उस दीपक के समान है जो उसे रोशनी देता है और उसके उद्देश्य के प्रति दिशा निर्देश देता है। ऐसे ही दिए हुए पैमाने या मूल्यों पर आधारित जीवन मनुष्य को सम्पूर्ण बना सकता है और मनुष्य को चिंतक और चेतन बने रहने की आदत डाले, अतः वर्तमान परिस्थितियों को देते हुए हमें नैतिकता और उससे जुडे मूल्यों को तार्किकता के साथ ग्रहण और निर्धारण करना पड़ेगा ताकि ''दार्शनिकता सार्वभौम होती है'' इस कथन का न्यायपूर्ण प्रयोग कर सकें।

## सन्दर्भ और टिप्पणियाँ : -

1. डॉ. नरेश प्रसाद तिवारी, चार्वाक का नैतिक दर्शन बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना, 2010 पृष्ट 78
2. डी.एन.सिंह ''बदलते सामाजिक परिवेश में मूल्य और तकनीकी की भूमिका'', तकनीकी एवं मूल्य, सं. राजेन्द्र वरूप भटनागर एवं अन्य, सोसाइटी फॉर फिलोसोफिकल प्रैकिसस, काउंसिल एंड स्पिरिचुअल हीलिंग, जयपुर,2014 पृष्ट 13–23
3. वही,
4. डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, संस्कृति दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1990, पृष्ट 79.
5. वही, पृष्ट126–127,
6. वही, उद्धरण ऍम.एन.श्रीनिवास, सशोल चेंज मॉडर्न इंडिया, 1966, पृष्ट 06,
7. डी.एन.सिंह ''बदलते सामाजिक परिवेश में मूल्य और तकनीकी की भूमिका'', तकनीकी एवं मूल्य, सं. राजन्द्रे स्वरूप भटनागर एवं अन्य सोसाइटी फॉर फिलोसीफिकल प्रैकिसस, काउंसलिंग एंड स्पिरिचुअल हीलिंग, जयपुर,2014 पृष्ट 13–23
8. वही,
9. शालिंदर सिंह और अन्य ''फंडामेंटल्स और फिलोसोफी एंड एथिक्स'', कृष्णा ब्रदर्स, जालंधर, 2011 पृष्ट 94,
10. एस.आर.दारापुरी, डॉ. अम्बेडकर का आर्थिक दर्शनः भूमंडलीकरण एवं निजीकरण, दलित मुक्ति, सोमवार, 15 अप्रैल 2013

* * *